ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 25 3 से 9 सितम्बर, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 भा. कृ. 04

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के रजत जयन्ती समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ भव्य अभिनन्दन

आर्य समाज को शक्तिशाली बनाने के लिए सभी आर्यजन एक हों

– स्वामी आर्यवेश

भारतीयों ने फहराया अमेरिका में ओ३म् का झण्डा

– प. माया प्रकाश त्यागी

प्रवासी भारतीयों द्वारा अमेरिका में किये जा रहे कार्य हमारे लिए भी अनुकरणीय

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

विभिन्न देशों से पधारे हजारों आर्य प्रतिनिधियों की उपस्थिति में रजत जयन्ती समारोह सोत्साह सफलता पूर्वक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का रजत जयन्ती आर्य महासम्मेलन विश्व की विख्यात आर्य समाज ग्रेटर होस्टन (टैक्सास) में 30 जुलाई से 2 अगस्त, 2015 तक उत्साहपूर्ण वातावरण में भव्य आयोजन के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह में भारत के अतिरिक्त इंग्लैण्ड, गुयाना, बैंकूवर (कनाडा), न्यूयार्क, न्यूजर्सी, एटलांटा, कैलीफोर्निया, मिशिगन, फ्लोरिडा तथा अन्य स्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन श्री विश्रुत आर्य जी ने अत्यन्त कुशलता से किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उनके अतिरिक्त पूरे भारत से अनकों आर्यजनों ने समारोह में भाग लिया। जिनमें मुख्य रूप से स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री श्री बिरजानन्द बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह, श्री साहिब सिंह, मेजर विजय आर्य, आचार्य ज्ञानेश्वर, श्री धर्मपाल (दिल्ली), श्री विनय आर्य (दिल्ली) डॉ. विनय विद्यालंकार श्री बलबीर आचार्य, श्री देवेन्द्र भगत तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के चार साथी मुख्य हैं।

चार दिवसीय इस ऐतिहासिक रजत जयन्ती आर्य महासम्मेलन में भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त सर्वश्री गिरीश खोसला, डॉ. देवबाला, डॉ. राजेन्द्र गांधी, डॉ. रमेश गुप्ता, डॉ. भूपेन्द्र गुप्ता, आचार्य वेदश्रमी, श्री विराट आर्य, आचार्य चमन लाल गुप्ता, डॉ. अजय गुप्ता, आचार्य सूर्यनन्दा आदि के अतिरिक्त युवाओं के भी प्रभावशाली कार्यक्रम हुए। श्रीमती स्मृति श्रीवास्तव के भजनों का कार्यक्रम भी बेहद पसन्द किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विभिन्न अवसरों पर अपने ओजस्वी तथा हृदयग्राही उद्बोधन से सभी को अत्यन्त प्रभावित किया। स्वामी जी ने भारत में सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि आर्य समाज को पुनः गौरव प्रदान करने के लिए दो ही रास्ते हैं एक तो संगठन स्तर पर इसे मजबूती प्रदान की जाये, दूसरा इसकी विश्वसनीयता को बहाल किया जाये और मैं इन दोनों ही कार्यों को प्राथमिकता की दृष्टि से करने हेतु प्रयत्नशील हूँ। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज एक सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और शैक्षिक संस्था है जो वेद के आधार पर विश्व का कायाकल्प करने के दायित्व से बंधी हुई है। स्वामी जी ने कहा कि हम एक ऐसा आर्य समाज बनाना चाहते हैं जो चार दीवारी से मुक्त हो, उसके द्वार सप्ताह में एक बार नहीं चौबीसों घण्टे खुले रहें। दोनों समय यज्ञ हों, सामूहिक संध्या हो और सभी आर्यजन यज्ञीय भावना और अध्यात्मवाद को विश्वव्यापी बनाने के संघर्ष में सक्रिय हों और विश्व मानव को प्रभावित कर सकें। आर्य समाज को ऋषि दयानन्द का आर्य समाज बनाने के लिए सामाजिक बुराईयों यथा साम्प्रदायिकता, जातिवाद, कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड, शोषण, नशाखोरी गोहत्या और नारी उत्पीड़न के विरुद्ध जोर-शोर से कार्य करना होगा। स्वामी जी ने कहा कि हमने भारत में उपरोक्त बुराईयों को लेकर जन संघर्ष छेड़ा हुआ है। सारे देश में जन जागरण यात्राएं, गोष्ठियाँ, सम्मेलन करके हम आम जनता को जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं और लोग आर्य समाज के साथ जुड़ रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि यदि हम संगठित होकर आर्य समाज के कार्य को करें तो वह दिन दूर नहीं कि हम वेद की ज्योति से समूचे विश्व को प्रकाशित और सुवासित कर पायेंगे और आर्य समाज को पुनः गौरवान्वित कर पायेगे।

इस अवसर सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने उद्बोधन में अमेरिका में हो रहे वेद प्रचार तथा आर्य समाज के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीयों ने आर्य समाज के कार्यों को सम्मान दिलाते हुए अमेरिका में ओ३म् का ध्वज फहराकर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को साकार किया है।

इस अवसर पर अनेकों गुरुकुलों के निर्माणकर्त्ता स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने अमेरिका में प्रवासी भारतीयों द्वारा किये जा रहे समाज सेवा के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहाँ इतने विशाल स्तर पर सफलतापूर्वक आयोजन करके हम भारतीयों का मन मोह लिया और इनके द्वारा किये जा रहे कार्य हम भारतीयों के लिए भी अनुकरणीय है।

इस अवसर पर सभी भारतीय अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

रजत जयन्ती आर्य महासम्मेलन का आयोजन ऐतिहासिक रहा। पूरा कार्यक्रम बेहद गरिमा, अनुशासन एवं शालीनता से परिपूर्ण था। इस भव्य कार्यक्रम का श्रेय आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका आर्य समाज होस्टन को जाता है। सभा के संस्थापक अध्यक्ष श्री गिरीश खोसला, सभा प्रधान श्री विजय भल्ला, सभा के युवा मंत्री श्री भुवनेश खोसला, श्री विश्रुत आर्य, श्री देव महाजन, श्री भूषण वर्मा, डॉ. रमेश गुप्ता, श्री मनीष गुलाटी, श्री राकेश वर्मा आदि ने सम्मेलन को सफल बनाने में विशेष योगदान प्रदान किया। सम्मेलन सफलता पूर्वक अपने उद्देश्यों को पूर्ण करते हुए अत्यन्त यादगार रहा।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वैदिक यमों की सार्वभौमिकता

–डॉ० संगीता चौधरी

वेद हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। वेदों में जहां आध्यात्मिक ज्ञान छिपा है वहीं ज्ञान के पुंज ये वेद जीवन के नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन कर जीवन को सुन्दर बना सुखपूर्वक जीने की कला भी सिखाते हैं। अतः इस सृष्टि में जहां जीवन है वहां वेदों की उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। वैदिक ऋचाएँ सर्वत्र–मनुष्य, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व–कल्याण की भावना से ओत–प्रोत हैं। यहां अधिकांश प्रार्थनाएँ सामूहिक रूप से की गयी हैं तथा समूह के लिए ही कल्याण कामना की गयी हैं अतः सर्वत्र वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना परिलक्षित होती है।

विश्व नियन्ता ने सम्पूर्ण विश्व को प्राकृतिक नियमों के माध्यम से अपनी मर्यादा में रहने तथा अपनी धुरी पर चलने का उपदेश दिया है। पृथ्वी अपनी धुरी से कभी नहीं डिगती और ऐसा होने पर विनाश का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार यदि मनुष्य अपनी धुरी पर चलता रहे तो निरन्तर कल्याण प्राप्त करेगा अन्यथा दुष्परिणाम भुगतने होंगे। **यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः सधर्मः** (वैशेषिक दर्शन) मनुष्य की यह धुरी उसका धर्म है, जिसका लक्षण इस प्रकार दिया गया है।–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

उपरोक्त धर्मों को आचरण में लाने पर मनुष्य कल्याण प्राप्त करता है। इस कल्याण प्राप्ति के लिए ही वेदों की महत्ता बताते हुए स्मृति कहती है–

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः।
तस्य नित्यम् क्षरत्येष पयोदधी घृतं मधु।।

अर्थात् जो मनुष्य एक वर्ष पर्यन्त यथाविधि नियमपूर्वक वेद का स्वाध्याय करता है उसे वेद कामधेनु की भाँति दूध, दही और घी आदि अर्थात् वेद उस व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का पल्लवन कर उसकी भौतिक, शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

वेदों में सर्वत्र विभिन्न देवताओं का वर्णन किया गया है। अपने दिव्य गुणों के कारण ही देवता दैवत्व को प्राप्त हुए हैं। अतः उनके दिव्य गुण ही उनकी विशेषता हैं। उन दैवीय गुणों के सर्वत्र वर्णन द्वारा वेद मनुष्य को तद् तद् गुणों को अंगीकार करने के लिए प्रेरित करते हैं। वरुण देव को वेदों में नैतिक देवता के रूप में स्वीकार किया गया है। वरुण देव व्यक्ति के सत्य और असत्य दोनों को जानने वाले हैं–

यासां राजा वरुणो याति यन्मध्ये सत्यानृते अब पश्यन्जनानाम्।

तथा नैतिक नियमों का उल्लंघन करने वाले दुराचरी ही अत्यन्त दुःख को जन्म देने वाले हैं।

नैतिक गुण या जीवन मूल्य मुख्य रूप से सत्य, अहिंसा अस्तेय, बह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर–प्रणिधान इत्यादिं हैं। वेद में पदे–पदे इन सबका महत्व प्रतिपादित है। यथा

सत्य

सत्य के स्वरूप का वर्णन करते हएु ऋग्वेद में कहा गया है **यादृगेव दृश्यते तादृगुच्येत।** इसी बात को महर्षि व्यास ने इस प्रकार कहा है कि अर्थानुकूल वाणी और मन का व्यवहार होना सत्य है अर्थात् जैसा देखा हो, जैसा अनुमान किया हो, जैसा सुना हो, वैसा वाणी से कथन करना और मन में धारण करना सत्य है। सत्य उज्ज्वल स्वरूप वाला तथा प्रकाशमान है।

वेदों में सत्य के प्रति निष्ठा व असत्य के पति घृणा की भावना स्पष्ट अभिलक्षित होती है। सत्य की शक्ति व महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है कि **सत्येनोत्तभिता भूमिः'** जिस प्रकार भूमि का आधार सत्य है उसी प्रकार आकाश भी सत्य का आश्रय लेकर ही अवलम्बित है। सम्पूर्ण संसार और प्राणी जिसके आश्रित है, जिससे दिन प्रकाशित होता है, सूर्योदय होता है तथा जल निरन्तर गति से प्रवाहित होता है, वही सत्य वाणी मेरी रक्षा करे। अतः निखिल ब्रह्माण्ड की स्थिति ऋत–सत्य रूप नियमों पर अवलम्बित है। नियमि के ये नियम अपरिवर्तनीय व अटल हैं, जो इनका परिवर्तन करने का प्रयत्न करते हैं वे असत्यवादी पापी–हिंसा कष्ट व विनाश के द्वारा उद्घाटित करते हुए नरक को जन्म देते हैं।

पापास सन्तो अनृता असत्या इदं पदम् जनता गभीरम्।

तथा सत्य श्रेष्ठ लोकों में प्रतिष्ठा दिलाने वाला है

अतः सत्य के महत्व को आत्मसात् करते हुए ऋग्वैदिक आर्यों ने ईश्वर से यह प्रार्थना की है– सत्य मार्ग से हमें ले चल और समस्त दुर्गुणों को दूर कर। क्योंकि सत्य की नाव ही पार लगाने वाली है। अतः सत्य के मार्ग पर चलो।

अहिंसा

मानव जीवन के साथ ही श्रेय और प्रेय प्राप्ति के लिए संघर्ष सर्गारम्भ से ही चला आ रहा है। इस जीवन संघर्ष में विविध क्लेश मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनेक रूपों में आक्रान्त करते हैं। इनके वशीभूत होकर जब मनुष्य अन्य प्राणियों को कष्ट देने के लिए सन्नद्ध हो जाता है तो उस वृत्ति का नाम हिंसा है।

हिंसात्मक वृत्तियाँ मनुष्य को विविध कष्टों से पीड़ित करने के साथ ही आध्यात्म प्रसाद से वञ्चित रखती हैं। वेदों में हिंसक के प्रति पदे–पदे घृणा के भाव लक्षित होते हैं, जो सर्वथा हिंसा के समर्थन में सहयोगी हैं। यथा– जो हमसे द्वेष करने वाले शत्रु हैं उन्हें हमसे पृथक करो। तथा अन्यत्र, जो व्यक्ति बुरे विचार से हिंसा के लिए अस्त्र चमकाता है, उससे और पाप से हमारी रक्षा करें। इस प्रकार स्थान–स्थान पर हिंसा व हिंसकों की निंदा की गई है तथा अहिंसा का अनुमोदन करते हुए कहा गया है कि अहिंसा से युक्त व्यक्ति वृद्धि को प्राप्त होता है तथा समृद्धि एवं ऐश्वर्य का स्वामी बनता है।

अस्तेय

स्तेय का अर्थ है स्वामी की आज्ञा के बिना अनधिकृत पदार्थ को ग्रहण कर लेना तथा मन, वचन, कर्म से इस प्रवृत्ति का त्याग करना अस्तेय है। महर्षि व्यास ने इसकी परिभाषा इस प्रकार की है– अशास्त्रपूर्वक दूसरे की वस्तु लेना अस्तेय उसका निषेध रूप है, जो अस्पृहा रूप है।

वेदों में अस्तेय नामक मानवीय मूल्य बहुशः प्रतिष्ठित हैं। वहाँ अपने कुल की उन्नति के विचार से चौर्य कर्म अर्थात् स्तेय को त्यागने तथा परिश्रम करने का संकल्प विद्यमान है। साथ ही चौर कर्म करने वालों, सद्कर्मियों को दूर रखने की प्रार्थना की गई है। साथ ही चोर को शारीरिक दण्ड देने व उससे रक्षा की प्रार्थनाएँ भी द्रष्टव्य हैं तथा **मा गृध कस्यस्विद्धनम्** कहकर अस्तेय के उपदेश का स्पष्ट उद्घोष किया गया है।

ब्रह्मचर्य

ब्रह्म प्राप्ति हेतु वेदाध्ययन करते हुए अष्टविध मैथुन त्यागव्रत पूर्वक ब्रह्म में विचरण का शील है, जिसका वह ब्रह्मचारी है। सामवेद में ब्रह्मचर्य के लाभ को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि ब्रह्मचर्य सेवन से चेहरे पर ओज कान्ति तथा ब्रह्मतेज होता है तथा इसी के द्वारा मृत्यु पर भी विजय पायी जा सकती है। योगदर्शन ने भी **ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्य लाभः** कहकर इसका समर्थन किया है।

अथर्ववेद के ग्यारहवें काण्ड का पाँचवा सूक्त जिसमें छब्बीस मन्त्र हैं पूर्णतः ब्रह्मचर्य के गुण महत्व व लाभ इत्यादि के वर्णन के लिए समर्पित है। इस प्रकार ब्रह्मचर्य का वर्णन वेदों में सुविहित है।

अपरिग्रह

महर्षि व्यास ने अपरिग्रह का लक्षण इस प्रकार किया है, विषयों के संग्रह करने में, उनके रक्षण और नाश से सर्वत्र हिंसा रूप दोष को देखकर स्वीकार न करना **अपरिग्रहण** कहलाता है। तथा अन्यत्र कहा गया है– भोग साधनों को स्वीकार न करना अपरिग्रह है। वेदों में अपरिग्रह के विरुद्ध भाव परिग्रह की निन्दा करते हुए कहा है कि स्वार्थी मनुष्य के लिए भोग सामग्री मृत्यु के समान होती है। ऐसा मनुष्य श्रेष्ठ कर्मों को न करते हुए अकेला ही भोग सामग्री का भोग करने वाला केवल पाप को ही भोगने वाला होता है।

अतः विपुल भोग ऐश्वर्य के परिप्रेक्ष्य में वेदों का मनुष्य के लिए स्पष्ट निर्देश है– **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा...।**

शौच

शुचिर पूतिभावे धातु से निष्पन्न **शुचि** शब्द से भाव अर्थ में अण् प्रत्यय करके शौच शब्द की निष्पत्ति हुई है। जिसका अर्थ है पवित्रता। पवित्रता को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– १. बाह्य अर्थात् शारीरिक शुद्धि, २. आन्तरिक अर्थात् वाचिक तथा मानसिक शुद्धि।

शारीरिक शुद्धि पवित्र जल से होती है। पात्र, वस्त्र, स्थान आदि को जल आदि से पवित्र रखना, शुद्ध, सात्विक नियमित, पवित्र भोजन से शरीर को निरोगी रखना, बाह्य शौच के अन्तर्गत आते हैं। शारीरिक शुद्धि के लिए वेदों में जल को उपयोगी, पुष्टिकारक तथा माता के समान पालक माना है।

स्वादन तथा भाषण की साधिका वाणी है, जो ज्ञान तथा कर्म दोनों को ही साधती है अतः वाणी का संयम इंद्रिय संयम में समाविष्ट है। अथर्ववेद में वाग् आदि इन्द्रियों की शुद्धि के लिए उनकें सशक्त एवं निर्दोष होने की प्रार्थना की गयी है। ऋग्वेद शुद्ध और पवित्र बनने के लिए प्रेरित करता है– शुद्ध पूता भवत यज्ञियासः।।

सन्तोष

केवल प्राणधारण योग्य उपलब्ध साधन से अधिक साधन के ग्रहण में इच्छा शून्यता सन्तोष है। वेदों में भी इसका वर्णन मिलता है। सन्तोष बुद्धि उत्पन्न करने के लिए त्यागपूर्वक भोग करो, किसी के धन की लालसा मत करो। सन्तोष से मनुष्य को उत्तम सुख की प्राप्ति होती है। अतः सुख चाहने वाले को परम सन्तोषी एवं संयमी होना चाहिए। अथर्ववेद में सदैव सन्तुष्ट रहने की कामना की गयी है।

कर्मशीलता

यद्यपि वेद सर्वत्र अपरिग्रह तथा सन्तोष शिक्षा देते हैं तथापि अकर्मण्यता का खण्डन करते हुए कर्मठ बनने का अनुमोदन करते हैं। देवता आलसी से प्रेम नहीं करते। जागना ऐश्वर्यप्रद है और सोना दरिद्रता का मूल है। इसलिए हे मनुष्य तू सौ हाथों से कमा, किन्तु हजार हाथों से दान कर। ऋग्वेद का **कितव सूक्त** कर्मण्य जीवन का सदुपदेश है, यहाँ जुआरी की दैन्य दशा का वर्णन है इस दशा से उठाने के लिए परिश्रम पूर्वक, खेती करके सुख सन्तोष प्राप्त करने की सलाह दी गयी है।

सौमनस्य

ऋग्वेद के १०वें मण्डल का अन्तिम सूक्त सौमनस्य सूक्त है वहाँ सौमनस्य से तात्पर्य समानता तथा मानसिक और बौद्धिक एकता है। समभाव की प्रेरणा देने वाले इस सूक्त में सबकी गति, विचार और मन–बुद्धि में सामञ्जस्य की प्रेरणा दी गयी है। सौमनस्य से भाव साम्य रखता हुआ अथर्ववेदीय संज्ञान सूक्त है। यह सूक्त सामान्य शिष्टाचार और जीवन के मूल सिद्धान्तों को निरूपित करता है। सभी लोगों के बीच समभाव तथा परस्पर सौहार्द उत्पन्न हो यह भावना इसमें व्यक्त की गयी है।

आज आधुनिक भौतिकवादी युग पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि मनुष्य झूठी आधुनिकता की दौड़ में अपने सच्चे जीवन मूल्यों को विस्मृत कर परम सत्य के सुख से वंचित हो चला है, ऐसी स्थिति में जब उसकी आकांक्षाओं का कोई अन्त नहीं तब वह न तो भौतिक सुखों से सन्तुष्ट है तथा आत्मिक व आध्यात्मिक सुख उसके पास है नहीं तब उसकी यही दशा है–

दोनों जहाँ से गये, हम, न माया मिली न राम।

ऐसे समय में वेद ही हमारे जीवन मूल्यों के प्रतिष्ठापन में सहयोगी होकर विश्व के लिए कल्याण के मार्ग को प्रशस्त कर सकते हैं।

वेदों के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को अमृत पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है। अमृत अर्थात् ईश्वर फिर जिस प्रकार ईश्वर प्रदत्त आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी समान रूप से उसके पुत्र अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के लिए है उसी प्रकार उसकी वाणी कहे जाने वाले वेद भी उसके सभी पुत्रों के लिए हैं तथा समानरूप से कल्याण कारी भी हैं– चाहे वह पुत्र अमेरिका में रहे या इंग्लैण्ड में, हिन्दू हो या मुसलमान, पारसी या रूसी– बस आवश्यकता है तो ईश्वर की इस ज्ञान गंगा में गोते लगाकर अपने मन, वचन और कर्म को पवित्र कर अपने विस्मृत जीवन मूल्यों को आत्मसात् कर शारीरिक बौद्धिक तथा आत्मिक लाभ प्राप्त करने की।

वर्तमान भौतिकवादी युग में विश्व पर्यन्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियों की उपयोगिता अपनी चरम सीमा पर पहुँचने को लालायित है, ऐसे वातावरण में पिछले मात्र एक या दो दशक से वैश्वीकरण का विचार प्रबल होता जा रहा है। जो पूरे संसार को विभिन्न उपायों से एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न कर रहा है, जैसे– एक भाषा, एक सभ्यता, एक बाजार, एक मुद्रा आदि। परन्तु इस प्रकार के प्रयत्न का उद्गम वेदों में वर्णित है। वेदों के लिए वैश्वीकरण एक नया विचार नहीं है अपितु वैश्वीकरण वास्तव में देखा जाए तो वेदों में निहित आचरण का प्रयोग ही है। वेदों से प्राप्त शिक्षा सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न करती है, जिससे मनुष्य अपने स्वार्थों से परे संसार के स्वार्थ की भावना का आचरण करने लगे। यही वेदों का ज्ञान है। वास्तव में सम्पूर्ण विश्व एक सूत्र में बंधे, आपसी द्वेष न हो। ईश्वर से प्राप्त सभी साधनों का प्रयोग सभी व्यक्तियों के कल्याण के लिए किया जाये, इसके लिए वेद प्रेरणा देते हैं तथा यही वर्तमान युग में विकास की आधार शिला है। इस प्रकार वेदोक्त यम सार्वजनीन एवं सार्वकालिक हैं।

शिक्षक दिवस 5 सितम्बर पर विशेष

वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्या दे रही है?

– डॉ. कृष्णलाल

हमें स्वतन्त्र मौलिक विचारक चाहिए, हमें निर्भीक कवि और लेखक चाहिए जो किसी 'वाद' से बंधे हुए न हों और केवल देश की महान् संस्कृति के अनुरूप जनता की देशी भाषा लिखे बोलें। हमें ऐसे वैज्ञानिक चाहिए जो विज्ञान के तत्व सर्वसाधारण को उनकी भाषा में समझा सकें। हमें निष्पक्ष, स्वतन्त्र पत्रकार चाहिए, न्यायाधीश, अधिवक्ता (वकील) चाहिए, अविष्कारक और गवेषक चाहिए। हमें केवल बाबू, अफसर, प्रबन्धक नहीं चाहिए। हमें चाहिए वे युवक युवतियां जो देश की मौलिक आवश्यकताओं के अनुरूप (पश्चिम की नकल किए बिना) वस्त्रों का नमूना तैयार करें, जिसमें नग्नता न हो, जो खाने पीने की उत्तम, वास्तव में स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओं के उद्योग स्थापित करें, ऐसी वस्तुएं जो नशे से दूर हों। हमें ऐसे युवक युवतियां चाहिए जिनका चरित्र ऊँचा हो और जो अपने कार्यों तथा उन्नत चरित्र से अपने देश का नाम उज्ज्वल कर सकें।

अब यह सोचना चाहिए कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली यह सब कर रही है या करने में समर्थ है।?

यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि स्थिति निराशाजनक बनी हुई है। पहली बात तो यह आलोच्य है कि यहां दोहरी शिक्षा प्रणाली चल रही है। एक ओर सामान्य सरकारी विद्यालय हैं- न पीने के पानी और शौचालय की उचित व्यवस्था है, न बैठने का कोई समुचित साधन है, न ही सिर पर उपयुक्त छत है, और न ही पढ़ने-लिखने के आवश्यक साधन हैं। दूसरी ओर वे तथाकथित आदर्श या पब्लिक विद्यालय हैं जहां प्रारम्भिक कक्षाओं में (प्रथम कक्षा से पूर्व) बच्चों पर गणवेष (अनावश्यक टाई सहित) तथा बोझ बढ़ाने वाली पुस्तकों पर अन्धाधुन्ध खर्चा करवाया जाता है अनाप-शनाप शिक्षा शुल्क और बसों का किराया इसके अतिरिक्त है।

इस प्रकार दोहरी शिक्षा प्रणाली सामाजिक चिन्तन में दरार डाल रही है। एक ओर सामान्य वर्ग के अभावग्रस्त छात्र हैं तो दूसरी ओर आभिजात्य वर्ग के सर्व सुविधासम्पन्न छात्र हैं जिनके वस्त्रों पर कभी कीचड़ का छींटा भी नहीं लग सकता।

इस दरार को बढ़ाने में दुर्भाग्य से राजनीतिक सरकारी जातिगत आरक्षण भी सहायता कर रहा है और इसका वर्तमान ढांचे में कहीं कोई अन्त दिखाई नहीं देता। योग्यता हो या न हो, सरकारी विद्यालयों में विशेष जाति के अध्यापकों की नियुक्ति करके संख्या पूरी करनी आवश्यक है। यह स्थिति प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर उच्च विद्यालयों तक में समान है। दूसरी ओर पब्लिक स्कूलों में नियुक्तियाँ केवल योग्यता के आधार पर होती हैं। शिक्षा की गुणवत्ता के लिए सुयोग्य समर्पित अध्यापक का होना आवश्यक है।

परन्तु दुर्भाग्य से दुकानदारी चलाने के लिए पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी और अंग्रेजियत को ही आदर्श मान लिया गया है। एकदम प्रारम्भिक कक्षाओं में दयानन्द के नाम पर चलने वाले विद्यालयों में भी मानों हिन्दी को अप्रयोज्य मानकर केवल अंग्रेजी वर्णमाला, अंग्रेजी गिनती, अंग्रेजी तुकान्त कविताएं (पोयम्स) ही सिखाई जाती हैं। मातृभाषा हिन्दी बेचारी उपेक्षित रहती है। न हिन्दी में गिनती, न पहाड़े, न सामाजिक सुबोधता की दृष्टि। कहीं-कहीं केवल वार्षिकोत्सवों के 'सांस्कृतिक' कार्यक्रमों में हिन्दी का प्रयोग करना पड़ता है। अन्यथा तो हम दयानन्द विद्यालयों में भी 'गुडमार्निंग' साहब तैयार करने में लगे हुए हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा न पढ़ाकर अंग्रेजी पढ़ाकर अथवा अंग्रेजी की शिक्षा पर अधिक बल देकर हम संविधान के उस अनुच्छेद (सं-350अ) की अवहेलना तो नहीं कर रहे जिसमें प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है? यद्यपि यह निर्देश भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के लिए उद्दिष्ट है तथापि मातृभाषा से शिक्षा के प्रसंग में आधार रूप में यह माना ही गया है कि बहुसंख्यक बच्चों की प्राथमिक शिक्षा तो उनकी मातृभाषा में शिक्षा के प्रसंग में आधार रूप में यह माना ही गया है कि बहुसंख्यक बच्चों की प्राथमिक शिक्षा तो उनकी मातृभाषा में होती ही होगी। संविधान का उल्लंघन करने वाले ऐसे विद्यालयों को सरकार को बन्द कर देना चाहिए और भले ही शिक्षा कर लगाकर सरकारी विद्यालयों का स्तर उठाना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्य से सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के स्तर के सुधार का अर्थ अंग्रेजी की पढ़ाई ही ले लिया गया है। दिल्ली नगर निगम के विद्यालयों में पहली कक्षा से अंग्रेजी की पढ़ाई संविधान की भावना की अवहेलना तो है ही, साथ ही उस पर जनता के धन का अपव्यय निर्ममता से किया जा रहा है। हम जानते हैं कि स्कूल की बात छोड़ें'' कालेज स्तर पर भी बच्चे तीन-तीन वर्ष तक अंग्रेजी में उत्तीर्ण नहीं होते। अंग्रेजी का यह मोह राष्ट्रीय समय और धन की हानि तो है ही, राष्ट्रीय गौरव के विपरीत भी है।

अंग्रेजी को और अंग्रेजी में विषयों को रटते-रटते उनका खेल कूद, सोना आराम, सब छूट जाता है। इस सबका उनके स्वास्थ्य और सामाजिक मानसिकता पर कुप्रभाव पड़ता है। इनके अतिरिक्त दूरदर्शन भी उन्हें आकृष्ट करता ही है। वह भी समय मांगता है। प्रकृति से भी बच्चे कट जाते हैं। उनके विचार कुण्ठित हो जाते हैं। सामान्य समय से भी सांस्कृतिक परम्पराओं से दूर होने के कारण उनके विषय में बच्चों का चिन्तन अवरुद्ध हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में हम किसी के रवीन्द्र नाथ ठाकुर, अरविन्द, जय शंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, सुमित्रानन्दन पंत बनने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा भी नैतिकता का ह्रास करने में सहायक है। जो समय बच्चे का नैतिकता सीखने का, उसका अभ्यास करने का होता है, उसी समय उसके भीतर कमाने की ललक पैदा कर दी जाती है। शिक्षा के लिए शिक्षा और सच्चरित्र उन्नत सामाजिक बनाने के लिए शिक्षा का आदर्श बीच में ही छूट जाता है। हम जानते हैं कि इन आदर्शों को पनपने के लिए कम से कम सारी स्कूली शिक्षा की अवधि अपेक्षित है। इस अवधि में उसे रोजगार की चिन्ता से मुक्त होना चाहिए। हां, ग्यारहवीं कक्षा में विषयों का चयन करते हुए इस ओर ध्यान दिया जा सकता है।

विषय को ठीक से गहराई तक समझने के लिए स्वभाषा (हिन्दी) के माध्यम की उपेक्षा किसी प्रकार नहीं की जा सकती। इसके साथ-साथ, विशेष रूप से दयानन्द के नाम पर संचालित संस्थाओं में, बारहवीं कक्षा तक (भले ही ऐच्छिक अतिरिक्त विषय के रूप में) सब छात्रों के लिए संस्कृत अनिवार्य होनी चाहिए। नैतिकता और सांस्कृतिक चिन्तन मनन उत्थान के लिए यह आवश्यक है। इससे छात्र को सब भाषाओं के मध्य एक सूत्रता की अनुभूति होगी। विद्यालयों में भारतीय सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन और उनमें अनुभवी व्यक्तियों के भाषण छात्रों का सब प्रकार का मार्गदर्शन करते हैं।

- विश्वनीड ई-937, सरस्वती विहार, दिल्ली

Misrepresentation Of The Vedas : A Dangerous Fashion

A Rejoinder

By Prof. K.v. Paliwal Ph. D.

AN ARTICLE has appeared in 'Surya' entitled 'The Land of Kamasutra' that "the Vedas have many references to prostitution as organised and established institution" This magazine is edited by Mr. Maneka Gandhi, wife of famous Sanjaya Gandhi. I feel pity on the ignorance of the author for making such an irresponsible, inappropriate, unjust and absolutely baseless comment.

I am a regular and a serious reader of the Vedas since 1950 and have gone through not only once but several times their Hindi, Sanskrit and English translations and could not come across a single hymn in the Vedas supporting the prostitution. It is simply the author's biased imagination to malign the Vedas and establish prostitutions on their sacred name . Out of about seventeen thousand vedic hymns there is not a single even purporting prostitution.

It has become a fashion of the day to propagate and establish any social or religious evil on the name of Vedas because these Texts have been the sources of inspiration for millions of Indians since times immemorial. It is a different issue to justify prostitution on biological psychological and natural instincts bans of human beings. But it is highly unethical and unjust to establish it on the name of Vedas when they support not the least in any human of all the four Vedas. Being unaware of the theme and contents of the Vedas, the author need not drag the Vedas into this complex socio-economic universal evil in one form or the other.

The above statement can not be established and proved it by quoting the original references of the Vedas along with their translations. And if the writing fails to do so, it becomes his moral duty to confess his ignorance of the Vedic philosophies and apologize publicly for injuring the feelings of crores of people who regard these religious Holy scriptures as the Supreme Source of inspiration. It is a heinous crime and is against the basic laws of journalism to make a false propaganda about the fact which he does not know. It is most unfortunate to justify prostitution in the name of the Vedas.

Here are excerpts from a reply received from the writer of the article on the prostitution in the Vedas, which highlights the shallowness of the knowledge of the object.

"In all humility, let me admit that the source of my statement was not direct but second-hand. I had picked up this reference from an article appearing in one of the leading weeklies of Asia.

"However, I take this opportunity to personally apologize to you for having included a profane statement of doubtful overacuty in my article, and for injuring the sentiments of crores of people including yours".

"You would appreciate that one cannot conceivably refer back every statement one makes to the original source. None the less it is indeed surprising that the learned professor took as long as he did to detect this fallacy. Now I wish this was indicated to me earlier? My apologies for having caused you mental strain, which could well have been avoided if you had not taken the trouble to dig through all the four Vedas and its various translations to find whether a reference about prostitution did really exist.

"Sir, you are at liberty to correspond with me directly on this issue, may be there are still some "fashionable comments" which might have escaped your attention and consequently have remained unanswered.

With regards, Your sincerely, Sd. (Prashanta Misra).

योगीराज श्रीकृष्ण और आर्य समाज

– डॉ. महेश विद्यालंकार, दिल्ली

भारत का सौभाग्य रहा है कि यहाँ अनेक ऋषि-मुनियों, सन्तों व महापुरुषों के जन्म हुए हैं। इसी परम्परा में भगवान् श्रीकृष्ण जैसे धर्मात्मा, पुण्यात्मा,योगीराज, नीतिज्ञ, तपस्वी, त्यागी, लोकहितकारी महामानव का नाम संसार बड़ी श्रद्धा, भक्ति और पूजा भाव से लेता है। श्री कृष्ण अपने व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व से संसार के प्रेरक तथा मार्गदर्शक बने। इतिहास में ऐसा विलक्षण अद्भुत् क्रान्तिकारी सम्पूर्ण कला युक्त व्यक्तित्व दुर्लभ है। हजारों वर्षों के घात-प्रतिघातों, विवादों और तूफानों को झेलते हुए वे आज भी पूजित, श्रद्धेय स्मरणीय तथा अलौकिक महापुरुष के पद पर प्रतिष्ठित हैं। उनका जन्मदिवस भारत में नहीं, अपितु विदेशो में भी आदर, श्रद्धा एवं भक्ति भावना से मनाया जाता है। वे भारतीय धार्मिकता व आस्तिकता के प्रतीक हैं।

योगीराज श्रीकृष्ण का जन्म कारावास में हुआ। जन्म से पूर्व ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर में विमाता की गोद में पले। मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर भागना पड़ा। धर्म युद्ध में नाना रूप धारण करने पड़े अपमान और कष्टों का जहर पीया। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियों, कठिनाईयों, मुसीबतों और संघर्षों का अजायब घर रहा है। न जाने क्या-क्या करना पड़ा। ऐसी अवस्था में भी वे कभी निराश, हताश तथा उदास नहीं हुए। कभी चेहरे पर शिकन नहीं आने दी। कर्मयोगी बनकर सदा मानवता के कल्याण में लगे रहे। सदैव मुस्कराते रहे। आज के भूले-भटके, निराश, हताश और साधनहीन मानव समाज को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन का यह प्रेरक पक्ष सदा सम्भलने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। वर्तमान जगत श्रीकृष्ण के जीवन से सीखना चाहे तो बहुत कुछ सीख सकता है। दुर्भाग्य है कि हमने अपने महापुरुषो के जीवन चरित्रों को इतना विकृत, कलंकित और उल्टी सीधी बातों से भर दिया है कि आज उनके सत्य, यथार्थ एवं प्रेरक पक्ष का पता ही नहीं चलता है। पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण के चरित्र व लीलाओं को तो दुनिया मान और जान रही है। महाभारत में वर्णित असली श्रीकृष्ण के स्वरूप तथा कार्यों को लोग भूल रहे हैं। पुराणों और लोक साहित्य में श्री कृष्ण को चोर, जार शिरोमणि, मक्खन चोर, लम्पट, भोगेश्वर आदि के विशेषण दिए हैं। वर्तमान टेलीविजन सीरियल, रासलीला, कृष्णलीला और कथाओं आदि के माध्यम से भयंकर, अश्लीलता, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। चित्र की पूजा हो रही है, चरित्र का आदर्श छूट रहा है।

महाभारत में व्यास जी के इस कथन से श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की उच्चता तथा महानता का पता चलता है – 'कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम्' महाभारत में यदि कोई सर्वमान्य व सर्वपूज्य थे, तो केवल भगवान श्रीकृष्ण थे। उनके वास्तविक स्वरूप का पता महाभारत में चलता है। जहां उन्हें सर्वगुण सम्पन्न, राष्ट्रनाक, विश्ववन्द्य, योगीराज,उपद्रष्टा, नीतिनिपुण, धर्मरक्षक, मार्गदर्शक आदि विशेषण दिए गए हैं। महाभारत से ही गीता निकली है। गीता ने जो संसार को उच्चकोटि का व्यावहारिक जीवन दर्शन दिया है, उसके आगे सारा संसार नतमस्तक है। गीता ज्ञान को पढ़ और सुनकर कोई यह नहीं कह सकता है कि योगीराज श्रीकृष्ण भोगेश्वर थे। वे आदर्श महापुरुष थे। उनके जीवन में धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, काव्यकला, संगीत आदि का अद्भुत समन्वय था। उनका जीवन योग: कर्मसु कौशल। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण था। उन्होंने जो कार्य किया, निपुणता, सुन्दरता तथा कुशलता से किया। गायें चराईं, मुरली बजाई, दोस्ती निभाई, सारथी बने, युद्ध कराया। सेवा के सभी कार्यों में अपनी पहचान तथा छाप छोड़ी। सभी कामों में वे प्रेरणा व आदर्श के उदाहरण बन गए।

योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन का उद्देश्य था – (1)परित्राणाय साधुनाम् – सज्जनों की रक्षा करना, (2) विनाशाय दुस्कृताम् दुष्टों को सज़ा दिलाना और दलन करना, (3) धर्म संस्थापनार्थाय धर्म की रक्षा करना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। वे चाहते तो महाभारत की विजय के पश्चात् पाण्डवों के महामंत्री बन सकते थे। मगर उस महापुरुष ने सब कुछ त्याग दिया। वर्तमान राजनीति और राजनीतिज्ञ भगवान श्री कृष्ण से सीखना चाहें तो बहुत प्रेरणा सन्देश और आदर्श ले सकते हैं।

इस देश ने अपने महापुरुषों के साथ जितना अन्याय और अपमान किया है उतना और कहीं नहीं हुआ है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि जिन्हें हम भगवान कहते हें, उन्हीं भगवान को हम नचाते हैं, गवाते हैं और उन्हीं के नाम पर भीख मांगते हैं? तालियाँ बजा बजाकर तमाशा देखते हैं। मनोरंजन करते हैं उनकी नकल उतारते हैं। उन पर तरह-तरह के लांछन लगाते हैं। ऐसा करना अपने महापुरुषों के साथ घोर अपमान तथा अन्याय है। जिन्होंने कभी भीख नहीं मांगी थी, उन्हें हमने भिखारी बना दिया। क्या यही उनके उपकारों का बदला है? क्या यही उनके जन्म दिन मनाने की उपयोगिता, सार्थकता एवं व्यावहारिकता है? आज महापुरुषों के जन्मदिन, पर्व, कथा, प्रवचन, तीर्थ, मन्दिर, राम लीलाएँ, कृष्ण लीलाएँ आदि धार्मिक मनोरंजन, खाने-पीने, घूमने व मौजमस्ती के अवसर बनते जा रहे हैं। मूल तेजी से छूटता जा रहा है। इन कार्यक्रमों के पीछे जो सन्देश, प्रेरणा, व्रत, संकल्प और सीखने का भाव था वह कहीं नजर नहीं आता है। इसी कारण आज समाज में नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों में तेजी से गिरावट आ रही है। जड़-पूजा, आडम्बर, ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि तेजी से फैल रहे हैं। काल्पनिक चमत्कारिक और बेसिर-पैर की बातों को सतप्रवचन महाराज, बाबा वाक्यम् प्रमाणम् कह कर माने जा रहे हैं?

आर्य समाज सदा से सत्य का शोधक और सत्य का प्रचारक रहा है। आर्य समाज ने अपने महापुरुषों, महाग्रन्थों और संस्कृति की रक्षा की है। महर्षि दयानन्द ने योगीराज श्रीकृष्ण को उज्ज्वल आदर्श एवं प्रेरक चरित्र का प्रमाणपत्र दिया है। ऐसा कोई दे नहीं सकता है – वे कहते हैं ''श्री कृष्ण का गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र महापुरुष के सदृश है' आर्य समाज योगीराज श्री कृष्ण को महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करता है। आर्य समाज मूर्ति पूजा और अवतार नहीं मानता है। वह चित्र का सम्मान और चरित्र की पूजा का सन्देश देता है। यदि हम जीवन और जगत के लिए सीखना चाहें तो महापुरुषों से कदम-कदम पर प्रेरणा-सन्देश तथा आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। अपने जीवन का सुधार कर सकते हैं।

आर्य समाज सदा से सत्य का शोधक और सत्य का प्रचारक रहा है। आर्य समाज ने अपने महापुरुषों, महाग्रन्थों और संस्कृति की रक्षा की है। महर्षि दयानन्द ने योगीराज श्रीकृष्ण को उज्ज्वल आदर्श एवं प्रेरक चरित्र का प्रमाणपत्र दिया है। ऐसा कोई दे नहीं सकता है – वे कहते हैं ''श्री कृष्ण का गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र महापुरुष के सदृश है' आर्य समाज योगीराज श्री कृष्ण को महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करता है। आर्य समाज मूर्ति पूजा और अवतार नहीं मानता है। वह चित्र का सम्मान और चरित्र की पूजा का सन्देश देता है। यदि हम जीवन और जगत के लिए सीखना चाहें तो महापुरुषों से कदम-कदम पर प्रेरणा-सन्देश तथा आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। अपने जीवन का सुधार कर सकते हैं।

आज आवश्यकता है योगीराज श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप और चरित्र को जानने तथा समझने की। इस महापुरुष के जीवन और चरित्र के साथ अनेक भ्रांतियाँ व विकृतियाँ जुड़ गई हैं। लोगों को सच्चाई व सत्य स्वरूप का बोध ही नहीं है। पूरे इतिहास में ''योगीराज'' की उपाधि केवल श्रीकृष्ण को ही मिली है। कैसी विचित्रता है कि हम उन्हें भोगीराज के रूप में माने और पूजे जा रहे हैं? वैज्ञानिक युग में भी तर्क-प्रमाण, युक्ति व व्यवहार से नहीं सोच पा रहे है? उनके असली जीवन तक नहीं पहुँच पा रहे हैं।

योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमें सन्देश व प्रेरणा दे रहा है कि आज संसार में अन्याय, अधर्म, पाप, अशान्ति, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि तेजी से बढ़ी है। हमें धर्म पूर्वक आचरण करते हुए सत्य-न्याय, धर्म-मर्यादा आदि की रक्षा करनी चाहिए। मानवता के रास्ते पर चलना चाहिए। श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन हमें जीने की कला सिखाता है। महापुरुषों के जन्मदिन, पर्व, जयन्तियाँ आदि मनाने की तभी सार्थकता, सफलता और विशेषता है जब हम उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ, पवित्र, सार्थक व परोपकारी बना सकें।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का रजत जयन्ती समारोह चित्रों के झरोखे से

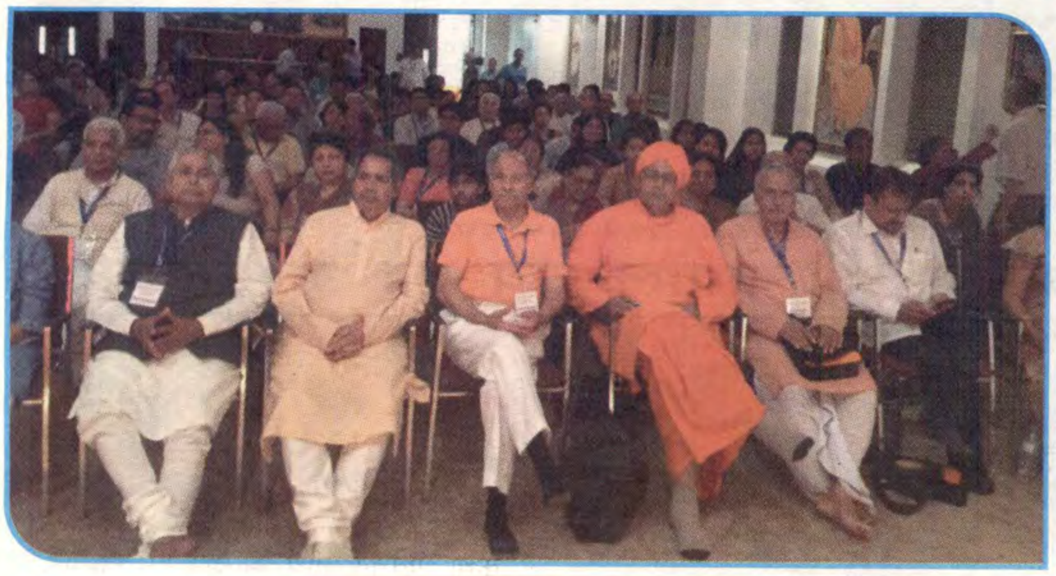

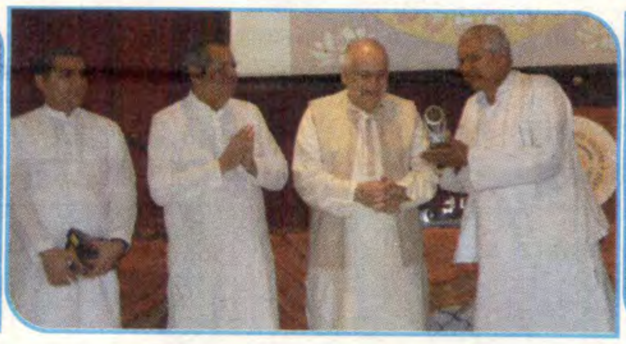

आर्य समाज, सूर्य निकेतन व शाहबाद मुहम्मदपुर में युवा संस्कार सम्पन्न

15 अगस्त 2015, आर्य समाज, सूर्य निकेतन, विकास मार्ग, दिल्ली में युवा संस्कार महोत्सव सम्पन्न हुआ। चित्र में–पार्षद श्री महेन्द्र आहुजा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, प्रधान श्री यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, शाहबादमुहम्मदपुर, नई दिल्ली में युवा संस्कार महोत्सव सम्पन्न हुआ। डा. अनिल आर्य, श्री रामकुमार सिंह, मन्त्री डा. मुकेश सुधीर आर्य आदि उपस्थित थे। चित्र में यज्ञ का द्रश्य ।

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय का व श्री गोपाल राय का अभिनन्दन

आर्य समाज डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली के तत्वावधान में ए.के.सी. हाउस में आयोजित श्रावणी कार्यकम में वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय का अभिनन्दन करते श्रीमती डा.अमिता चौहान, साथ में श्री आनन्द चौहान, डा.अनिल आर्य, डा.अशोक कुमार चौहान व प्रधान श्री अजय चौहान। मन्त्री श्री अजय सहगल ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, दुर्गापुरी विस्तार, दिल्ली में आयोजित युवा संस्कार महोत्सव में दिल्ली सरकार के मन्त्री श्री गोपाल राय का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, रामकुमार सिंह व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री। आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया श्री शिशुपाल आर्य के मधुर भ्जन हुए।

आर्य समाज प्रशान्त विहार व अशोक विहार, फेज- 1 में वेद प्रचार सम्पन्न

रविवार, 23 अगस्त 2015, आर्य समाज प्रशान्त विहार, दिल्ली में आचार्य नरेश जी (सोलन) के वेद प्रवचन व पं.जगत वर्मा के मधुर भजन हुए। चित्र में–पं. जगत वर्मा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, भारतभूषण आर्य, आचार्य शिवनारायण शास्त्री, मन्त्री श्री सोहनलाल मुखी व प्रधान श्री कृष्णचन्द पाहुजा, एडवोकेट। द्वितीय चित्र–रविवार, 30 अगस्त 2015, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली में आचार्य अखिलेश्वर जी की कथा व आचार्य उदयवीर शास्त्री (मथुरा) के भजन हुए। चित्र में–डा. अनिल आर्य का स्वागत करते हुए श्री सत्यपाल गांधी, आचार्य विजय भूषण आर्य, मन्त्री श्री जीवनलाल आर्य व आचार्य सतीश शास्त्री।

आर्य समाज, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली में युवा संस्कार महोत्सव सम्पन्न

शुकवार, 21 अगस्त 2015, आर्य समाज, सैक्टर–7, रोहिणी, दिल्ली में युवा संस्कार महोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में– शिक्षक प्रदीप आर्य व रोहित आर्य का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, मन्त्री श्री राजीव आर्य व श्री शिशुपाल आर्य। श्री सुरेन्द्र गुप्ता ने आशीर्वाद दिया। द्वितीय चित्र में आर्य युवक यज्ञ करते हुए।

पलवल में युवा संस्कार महोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न

शनिवार, 22 अगस्त 2015,आर्य समाज,जवाहर नगर (कैम्प), पलवल, हरियाणा में युवा संस्कार महोत्सव शानदार सफलता से सम्पन्न हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी,डा.अनिल आर्य, श्री वी.के.आर्य, प्रो. जयप्रकाश आर्य ने अपना आशीर्वाद दिया। जिला अध्यक्ष श्री दिनेश आर्य ने कुशल संचालन किया।

आर्य समाज, सन्देश विहार व विजय हाई स्कूल, सोनीपत में युवा संस्कार सम्पन्न

15 अगस्त 2015, आर्य समाज, सन्देश विहार, दिल्ली में युवा संस्कार महोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। पं.ज्ञान जी ने यज्ञ करवाया। चित्र में श्री एस.के. आहुजा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य व मन्त्री दुर्गेश आर्य। श्रीमती सीमा कपूर का विशेष योगदान रहा। द्वितीय चित्र–विजय हाई स्कूल सोनीपत में युवा संस्कार महोत्सव सम्पन्न हुआ। पं. हरिचन्द स्नेही ने यज्ञ करवाया। चित्र में–श्रीमती शालनी चावला का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री मनोहरलाल चावला,कै.अशोक गुलाटी, महात्मा वेद मुनि आदि।

स्वाधीनता दिवस पर दूरदर्शन द्वारा युवकों के नाम श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का सन्देश प्रसारित

आजादी की तीसरी लड़ाई के लिए युवा शक्ति को आह्वान

भारतवर्ष के युवक शहीदों के सपनों का भारत बनाने का संकल्प लें

जयपुर 25 अगस्त। दूरदर्शन जयपुर पर वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजापार्क जयपुर की छात्राओं का प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम 15 अगस्त को आयोजित किया गया और इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी को आमंत्रित किया गया और इसी कार्यक्रम के दौरान उन्हें राष्ट्र की युवा शक्ति को सन्देश देने के लिए आग्रह किया गया जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लाल किले पर दिये गये भाषण के पश्चात प्रसारित किया गया।

सामवेदी जी ने युवा शक्ति के नाम प्रसारित सन्देश में कहा कि आजादी की पहली लड़ाई 1857 मे लड़ी गई जिसमें महर्षि दयानंद ने सक्रिय भाग लिया क्यों कि [illegible] के जीवन चरित्र में 1857 से 1860 तक का [illegible] नहीं हैं। इतिहासकारों की मान्यता है कि इन तीन वर्षों की जानकारी इसलिए नहीं हैं कि वे गुप्त रूप से 1857 की क्रान्ति को सफल बनाने में लगे हुए थे। 1857 की क्रान्ति के विफल होने पर उन्होंने जन–जागरण अभियान प्रारम्भ किया और उनकी प्रेरणा से सारे भारतवर्ष में स्वाधीनता का दावानल सुलगने लगा। महर्षि ने ही सर्वप्रथम देश को स्वराज्य शब्द दिया और महर्षि की प्रेरणा से हजारों नौजवानों ने अपने प्राणो की आहुति दी जिनमें प्रमुख शेरे–पंजाब लाला लाजपतराय, अमर हुतात्मा स्वामी

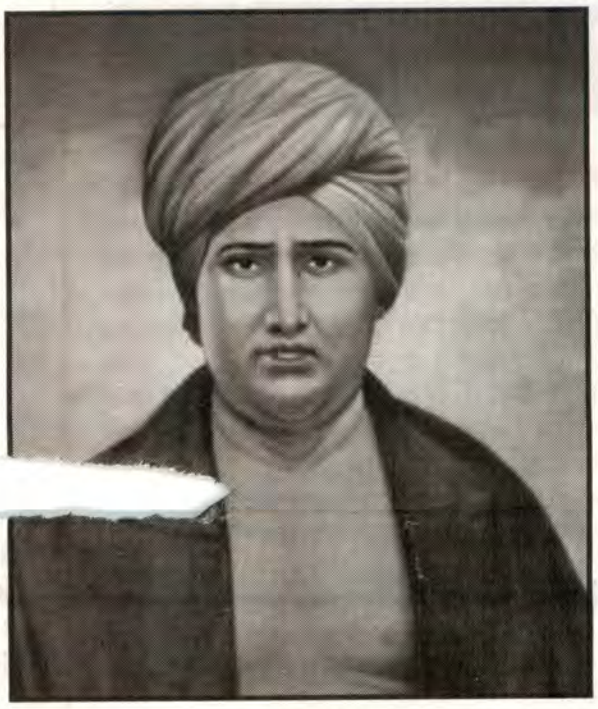

श्रद्धानंद, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे–आजम भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव आदि थे। भगतसिंह 23 वर्ष 5 महीने 26 दिन में फांसी पर चढ़ गया। इन शहीदों के आजाद भारत के क्या स्वप्न थे? वे मानते थे कि आजादी के बाद दूध–दही की नदियां बहेंगी, गरीबी मिट जायेगी, विषमता समाप्त होगी, किसान खुशहाल होंगे और हमारा देश पुनः विश्वगुरू बन जायेगा।

परन्तु आज हम आजादी के 68 साल बाद देश की क्या हालत देख रहे हैं। गरीबी है, भ्रष्टाचार है, बलात्कार है, अपहरण है। दो लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं। सर्वत्र निराशा ही निराशा है। अतः राष्ट्र के युवकों को मेरा आहवान है कि वे देश की आजादी के लिए शहीद होने वाले देश भक्तों की जीवनी पढ़ें और उनके रोमांचक बलिदान से प्रेरणा ले कर शहीदों के सपनों का भारत बनाएं। शहीदों के सपनों का भारत तब बनेगा जब पूंजीवाद समाप्त होगा, शोषण समाप्त होगा, समान शिक्षा पद्धति होगी, महिलाओं को राष्ट्र का आधार बनाया जायेगा और ऐसी लोकशक्ति खड़ी की जायेगी जो सत्ता द्वारा जनविरोधी कार्य करने पर उसे चुनौती दे सके। आज गांवों की यह स्थिति है कि चार परिवारों में एक परिवार की मासिक आय 5 हजार रूपये से भी कम हैं और 10 परिवारों में एक परिवार की मासिक आय 10 हजार रूपये हैं। अतः भारतवर्ष की युवा शक्ति को आजादी की तीसरी लड़ाई के लिए तैयारी करनी होगी, उन्हें ही शहीदों के सपनों के भारत का नक्शा बनाना होगा। यही शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की द्विवार्षिक राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सोल्लास सम्पन्न

डा.अनिल आर्य पुनः सर्वसम्मति से "राष्ट्रीय अध्यक्ष" निर्वाचित

जाति वादी आरक्षण समाप्त किया जाये : यह राष्ट्रीय एकता में है बाधक

बांये से परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष धर्मपाल आर्य, द्वितीय चित्र में प्रतिष्ठित आर्य प्रतिनिधि आर्य समाज कबीर बस्ती,दिल्ली के सभागार में ।

रविवार, 30 अगस्त 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की द्विवार्षिक राष्ट्रीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा की बैठक केन्द्रीय कार्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती,पुरानी सब्जी मण्डी,दिल्ली–110007 के सभागार में सोल्लास सम्पन्न हुई। शोक प्रस्ताव, गत वर्ष का आय–व्यय लेखा जोखा, आगामी वर्ष का बजट स्वीकृत होने के पश्चात कै. अशोक गुलाटी की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुआ,जिसमें सर्वसम्मति से डा. अनिल आर्य को दो वर्ष के लिये "राष्ट्रीय अध्यक्ष" चुना गया तथा उन्हें शेष कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा गठित करने का अधिकार दिया गया। उन्होंने महेन्द्र भाई को महामन्त्री व धर्मपाल आर्य को कोषाध्यक्ष मनोनीत करने की घोषणा की। महामन्त्री महेन्द्र भाई ने बैठक का कुशल संचालन किया व कोषाध्यक्ष धर्मपाल आर्य ने आर्य व्यय विवरण व बजट प्रस्तुत किया। देवेन्द्र भगत ने अमेरिका आर्य महासम्मेलन के संस्मरण सुनाये।

डा. अनिल आर्य ने परिषद् के समस्त अधिकारियों, विद्वतजनों व दानदाताओं का धन्यवाद व्यक्त करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। डा. आर्य ने देश की एकता में जाति गत आरक्षण को धातक बताते हुए प्रधानमन्त्री से इसे समाप्त करने की मांग की। विभिन्न प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किये व प्रीतिभोज का आनन्द लेकर सभी उत्साहपूर्वक विदा हुए।

28 अस्थमा रोगियों को पिलाई रात्रि 12 बजे निःशुल्क औषधियुक्त खीर

जयपुर : 30 अगस्त, 2015 को रात्रि 12 बजे सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान द्वारा चन्द्रमा की शीतल चांदनी की किरणों व औषधियुक्त खीर द्वारा 28 रोगियों का उपचार किया गया। संस्थान कोषाध्यक्ष व शिविर संयोजक पवन आर्य के अनुसार संस्थान संरक्षक यशपाल 'यश' ने रोगियों का हाल जानने के बाद उन्हें खान–पान व्यवहार में आवश्यक परहेजों की जानकारी दी।

'यश' ने उन्हें मांसाहार तथा नशे को आजीवन छोड़ने का संकल्प कराया तथा उष्ट्रासन भस्त्रिका प्राणायाम व सहज श्वाँसों के अभ्यास द्वारा ध्यान भी सिखाया।

आगामी शिविर 28 सितम्बर (सोमवार) को आयोजित होगा। पंजीकरण व जानकारी 9414360248 पर उपलब्ध है।

निर्वाचन के पश्चात प्रसन्न मुद्रा में डा.अनिल आर्य के साथ परिषद् की कर्मठ टीम के सदस्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने श्रावणी पर्व पर दस दिन में 40 कार्यक्रम किए हजारों युवकों ने यज्ञोपवीत धारण कर मांस, अण्डा, नशे से दूर रहने के लिये संकल्प

शनिवार, 14 अगस्त से रविवार 23 अगस्त 2015 तक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने "युवा संस्कार अभियान" चलाया ओर 10 दिन में 40 स्थानों पर लगातार कार्यकम करते हुए आम जनता के बीच आर्य समाज की बढ़ती सकियता व लोक प्रियता का परिचय दिया। अभियान में परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के साथ महेन्द्र भाई, धर्मपाल आर्य,रामकुमार सिंह,शिशुपाल आर्य, सुरेश शास्त्री, प्रकाशवीर शास्त्री, गवेन्द्र शास्त्री,सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, रोहित आर्य आदि का विशेष योगदान रहा।

उपरोक्त चित्र–आर्य समाज,प्रताप नगर,दिल्ली में आयोजित समारोह में कृष्णचन्द पाहुजा को सम्मानित करते रामकुमार सिंह, विधायक सोमदत, पी.डी.शर्मा (पूर्व ए.सी.पी.) व डा. अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री व आर्य तपस्वी सुखदेव जी यज्ञ करवाते हुए। पार्षद सतवीर शर्मा ने ध्वजारोहण किया। मन्त्री केवल कृष्ण सेठी व कोषाध्यक्ष गुलशन कुमार,प्रि. ज्योति शर्मा ने कार्यकम को सफल बनाया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/– रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।।

—ऋ० १/१/४

ऋषिः—**मधुच्छन्दाः।।** देवता—**अग्निः।।** छन्दः—**गायत्री।।**

विनय—हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सबकुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ–संघठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता— सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएँ तो हे प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना; हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि "हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है— सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन–शक्ति द्वारा कुटि[illegible] हिंसा के ज़ोर पर कुछ करना चाहेंगे त[illegible] घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न[illegible]गी।

शब्दार्थ—अग्ने=हे परमात्मन्! [illegible]**त्वम्**=तुम **यम्**=जिस **अध्वरं यज्ञम्**=कुटिलता तथा हि[illegible] रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**=सब और से[illegible] लेते हो **स इत्**=केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**=[illegible] लाता है।

साभार- 'वैदिक विनय'
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में दूरदर्शन पर आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की छात्राओं के ज्ञान से दर्शक अभिभूत

दीक्षा | ईशा | निशा | पूजा मीणा | रमा शर्मा | विनयलता

मौका था स्वतन्त्रता दिवस का, देश की आजादी का और मौका था झूमते गाते सावन के पर्व तीज का, जिसके उपलक्ष्य में महाविद्यालय की छात्राओं ने डी.डी. दूरदर्शन कार्यक्रम में लगातार दो दिन शिरकत की। जिसका प्रसारण 15.8.15 व 16.8.15 को डी.डी. राजस्थान पर किया गया।

वेदों के ज्ञान और आर्य सभ्यता तथा संस्कृति से परिपूर्ण वैदिक कन्या महाविद्यालय राजापार्क जयपुर एक ऐसा अद्भुत महाविद्यालय है जो प्रतिवर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित कर रहा है।

यहां की छात्राओं ने राजस्थान विश्वविद्यालय से विभिन्न विषयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किये। इन्हीं संस्कारों एवं योग्यताओं के साथ महाविद्यालय की छात्राओं ने डी.डी. राजस्थान द्वारा संचालित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लिया तथा अपने अद्‌भुद कौशल एवं प्रतिभाओं का परचम लहराया। छात्राओं के उत्साहवर्धन के लिए संस्था प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी के नेतृत्व में व्याख्याताओं ने भी कार्यक्रम में शिरकत की।

कार्यक्रम का संचालन पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी महेन्द्र सिंह सुराणा द्वारा किया गया।

सुराणा जी द्वारा विभिन्न प्रकार के स्वतन्त्रता संग्राम, राजनीति, भारतीय संविधान एवं स्त्रियों की स्थिति से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्न पूछे तथा सही जवाब देने वाली छात्राओं एवं व्याख्याताओं को पुरस्कृत किया गया। सुराणा जी ने पूछा कि स्वतंत्रता मिलने के बाद अब हमारे पास कोई बहाना नहीं रहा। यह कथन किसने कहे थे? बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा ईशा शर्मा ने बताया कि यह कथन डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहे थे। इसके अतिरिक्त यह पूछा गया कि वो कौन से प्रधानमंत्री थे जो अपनी पत्नी के कहने पर उनके लिए स्वयं साडी खरीदने जाते हैं और दुकान से बेहद सस्ती सूती साडी खरीदते हैं। इस प्रश्न का उत्तर दिया महाविद्यालय की छात्रा सपना मीणा ने और बताया कि लाल बहादुर शास्त्री जी ने अपनी पत्नी के लिए साडी खरीदी थी। महिला सशक्तीकरण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए यह पूछा गया कि शिक्षा, रोजगार और विभिन्न अधिकारों के अलावा वो कौन सी चीज है जिससे महिलाएँ आज भी वंचित है। इसका उत्तर दिया कॉलेज की व्याख्याता सुश्री सीमा शर्मा ने और बताया कि आज भी महिलाएँ स्वयं निर्णय लेने से वंचित हैं। कार्यक्रम में यह भी पूछा गया कि वो कौन सा देश है जहां की संसद का एक सदस्य भारतीय मतदाताओं द्वारा चुना जाता है? इसका उत्तर दिया महाविद्यालय की छात्रा विनयलता ने और बताया कि पांडीचेरी के मतदाता डाक द्वारा अपना मत फ्रांस भेजते हैं और फ्रांस की संसद के सदस्य को चुनते हैं।

तीज के पर्व पर सुराणा जी द्वारा यह प्रश्न किया कि लहरिया किससे बनाया जाता है? इसका उत्तर देते हुए कॉलेज की छात्रा रमा शर्मा ने बताया कि लहरिया टाई और डाई के द्वारा बनाया जाता है जो लहरों की भांति होता है। इसके अतिरिक्त यह प्रश्न किया गया कि मोठडा क्या होता है? इसका उत्तर देते हुए कॉलेज की छात्रा दीपिका यादव ने बताया कि जब दो लहरियां आपस में काटती है तो उस आकृति को मोठडा कहते हैं।

चिरमी कब और क्यूं गाया जाता है इसका क्या महत्व है? इसका उत्तर देते हुए कॉलेज की छात्रा निशा तिमन ने बताया कि विवाह के पश्चात लडकियां अपने मायके को याद करते हुए चिरमी गीत गाती हैं। यह भी पूछा गया कि तीज का व्रत महिलाएं और कुंवारी कन्याएं क्यों करती हैं। इस प्रश्न के उत्तर में सभी छात्राओं के हाथ हवा में उठ गए और इसके प्रति उत्तर में कॉलेज की छात्रा सीमा महावर ने बताया कि यह व्रत महिलाएं अपने सुहाग के लिए और कुंवारी कन्याएं अच्छे वर की प्राप्ति के लिए करती हैं। इस तरह वैदिक कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने अपने ज्ञान और जोश का परिचय देते हुए बहुत सारे पुरस्कार प्राप्त किये साथ ही साथ नृत्य और संगीत की अद्वितीय सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया।

विनत श्रद्धांजलि हात्मा सुमेधानन्द जी को

– बाबूराम शर्मा विभाकर

यह विनत श्रद्धांजली, तुमको नमन!
सन्त चम्बा के कहाँ, अब चल दिये?

(1)

आर्य समाजों में मधुर गुणगान थे तुम,
आर्य लोगों के लिए आह्वान थे तुम,
भांति-भांति यज्ञ को करते प्रतिष्ठित
खोज पूरक यज्ञीय वरदान थे तुम।
सौम्य थे बिलकुल सरल पर थे विरल,
शुभगुणों के खिलखिलाते थे कमल,
आपके सान्निध्य में जब हम गये,
मिल गये उत्तर मनोहर हल किये।
सन्त चम्बा ....।।

(2)

ओजश्री आभा मुखर मुख पर पसर,
चक्षुओं में भी चमक जाती उतर,
आपका गरिमामयी चलता मिशन,
हो नहीं अवरुद्ध हम करते मनन,
चाह वैदिक धर्म की लेकर सदा,
प्राणवन्ती मंत्र में पल-पल जिए।
सन्त चम्बा ....।।

– बाबूराम शर्मा विभाकर

52/2 लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद-201001
मो.:- 9350451497

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।